बालभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – पंचम् **दिनांक 03-09-2020**

विषय – हिन्दी **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज नीति के दोहे (कविता) के अन्तर्गत रहीम जी के दोहे का अपने शब्दों में अर्थ स्पष्ट करेंगे।

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय. टूटे पे फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय.

अर्थ : रहीम कहते हैं कि प्रेम का नाता नाज़ुक होता है. इसे झटका देकर तोड़ना उचित नहीं होता. यदि यह प्रेम का धागा एक बार टूट जाता है तो फिर इसे मिलाना कठिन होता है और यदि मिल भी जाए तो टूटे हुए धागों के बीच में गाँठ पड़ जाती है.

शब्दार्थ

तोरेउ = तोड़ो

जुरै = जुड़े

गृहकार्य

(1) दोहे की पंक्तियाँ पूरी कीजिए

(क) साँच बराबर तप नहीं,.....।

(ख) जाके..... है, ताके ..... आप।।

(ग) माखी..... में गड़ि रही .....लपटाय।

(घ) .....और..... धुनै .....बुरी बलाय।।

(ङ) यों रहीम..... होत है ,..... के संग।

(च) .....को लगै, ज्यों..... को रंग ।।

(2) मधुर संबंधों की तुलना धागे से क्यों की गई है?

(3) सही विकल्प सही का निशान लगाइए

(क) अपने मन के अंदर की बुराइयों को पहचानने की बात किसने कही?

(अ) रहीम ने (ब) कबीर दास ने (स) सूरदास ने (द) तुलसीदास ने

(ख) मक्खी किस आदत के कारण गुड़ में चिपक जाती है?

(अ) झगड़ने की (ब) खेलने की (स) आलस की (द) लालच की

(ग) कबीर दास जी ने सबसे बड़ा तप किसे बताया है?

(अ) मंत्र जपने को (ब) सच्चाई को (स) पूजा पाठ को (द) परिश्रम को